लोकप्रिय विज्ञान साहित्य के दीप स्तम्भः गुणाकर मुले

चक्रेश जैन

हिन्दी साहित्य जगत के बाबा नागार्जुन और राहुल सांकृत्यायन के साथ लंबी अवधि तक जुड़े रहे प्रख्यात विज्ञान लेखक एवं गंभीर अध्येता गुणाकर मुले का अक्टूबर 2009 में निधन लोकप्रिय विज्ञान साहित्य जगत एवं स्वतंत्र विज्ञान पत्रकारिता की एक बड़ी क्षति है।

उन्होंने लगभग पचास वर्षों तक विज्ञान लेखन किया। अपनी इस लेखन-यात्रा के दौरान उन्होंने लगभग तीन हज़ार लोकप्रिय विज्ञान लेख और पचास मौलिक पुस्तकें लिखीं। इनमें गणित की पहेलियां, आकाश दर्शन, अक्षरों की कहानी, नक्षत्र लोक आदि प्रशंसित, चर्चित एवं पुरस्कृत कृतियां हैं।

गुणाकर मुले विलक्षण प्रतिभा के धनी थे। प्रामाणिक लेखन उनकी विशेषता थी। उनकी जितनी गहरी पैठ विज्ञान के विषयों में थी, उतनी ही पैठ साहित्य एवं इतिहास में भी थी। उनके कई लेख प्राचीन विज्ञान तथा कला से सम्बंधित हैं। कम्प्यूटर पर हिन्दी में पहली पुस्तक 'क्या है कम्प्यूटर' के लेखक गुणाकर मुले को आत्माराम, हिन्दी अकादमी तथा अन्य प्रतिष्ठित पुरस्कारों से नवाज़ा गया। इलाहाबाद विश्वविद्यालय से गणित में स्नातकोत्तर उपाधि लेने के बाद वे आजीवन विज्ञान लेखन की अलख जगाते रहे। गुणाकर मुले मूलतः मराठी भाषी थे, लेकिन इसकी झलक उनके हिंदी लेखन में ज़रा भी नहीं मिलती। उन्होंने विज्ञान लेखन की भाषा को सरस और समृद्ध बनाया। पारिभाषिक एवं तकनीकी शब्दों के पारदर्शी अर्थ खोजने में उन्होंने उल्लेखनीय योगदान किया।

सम सामयिक विषयों एवं घटनाओं पर प्रकाशित राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं जैसे दिनमान, धर्मयुग, रविवार, साप्ताहिक हिन्दुस्तान आदि के प्रतिष्ठित लेखकों में गुणाकर मुले भी थे। संवाद एजेंसी प्रेस ट्रस्ट ऑफ इंडिया (पीटीआई) की हिन्दी फीचर सेवा के माध्यम से गुणाकर मुले के लेख राष्ट्रीय एवं प्रादेशिक समाचार-पत्रों में प्रकाशित हुए। यह सच है कि बहुत सारे पाठकों की गुणाकर मुले से व्यक्तिगत मुलाकात कभी नहीं हुई; लेकिन समाचार पत्रों के विचार पृष्ठ पर प्रकाशित लेखों से प्रायः मुठभेड़ होती रही। साहित्य के अध्येता हों या शोधकर्त्ता, वैज्ञानिक हों या राजनेता, संस्कृति कर्मी हों अथवा प्रबंधक, सब उनकी वैज्ञानिक रचनाओं के सच्चे प्रशंसक थे।

उन्होंने अंतरिक्ष विज्ञान में भारतीय उपग्रह श्रृंखला 'इन्सैट' से लेकर अत्यधिक चर्चित महाअणु 'डीएनए' पर दिलचस्प, सूचनाप्रद एवं प्रामाणिक आलेख लिखे। हिन्दी विज्ञान लेखन की गद्य विधा को समृद्ध से समृद्धतर बनाने की दिशा में उनका प्रयास अविराम जारी रहा और जीवन के उत्तरार्द्ध में भी इस मैदान में सक्रिय रहे।

विवादों से दूर लोकप्रिय विज्ञान लेखक गुणाकर मुले ने दिल्ली को अपनी कर्मभूमि बनाया और स्वतंत्र विज्ञान पत्रकारिता के क्षेत्र में नया इतिहास रचा। पूरे देश में स्वतंत्र विज्ञान पत्रकारिता में दो ही नाम लिए जा सकते हैं- श्री गुणाकर मुले एवं इलाहाबाद के श्री शुकदेव प्रसाद। गुणाकर मुले अब हमारे बीच नहीं हैं। उन्होंने सस्ती लोकप्रियता और सनसनीखेज पत्रकारिता से दूरी बनाए रखी और अपनी एक अलग पहचान स्थापित की।

हिन्दी विज्ञान लेखन को नई जमीन देने वाले गुणाकर मुले ने पुस्तकें लिखीं, पत्रकारिता की, अनुवाद किया, व्याख्यान दिए और ज्वलंत वैज्ञानिक मुद्दों से मुठभेड़ की। तकनीकी, जटिल और नीरस तथ्यों को सरलता एवं स्पष्टता के साथ लिपिबद्ध करते हुए बड़ी संख्या में विज्ञानप्रेमी पाठकों की प्रशंसा और स्नेह प्राप्त किया।

हिन्दी साहित्य के शोधकर्ता बाबा नागार्जुन के योगदान को आज भी नहीं भूले हैं। आशा है, विज्ञान लेखक तथा विज्ञान संचार के नए शोधकर्ता एवं लेखक गुणाकर मुले को भी एक प्रेरणादायी लेखक के रूप में याद रखेंगे। ***(स्रोत फीचर्स)***